Elec Hindi

Paper A

Sapna Saini
491/08

~~Sangeeta Malhotra~~
~~170/08~~

Date 22/07/08

3

1) काव्य की परिभाषा
2) तत्व
3) काव्य के प्रयोजन
4) काव्य का प्रयोजन हेतु

उ० काव्य की परिभाषा :
कविता मनुष्य के मन की उत्कट (श्रेष्ठ) अनुभूतियों का सहज उच्छलन है।
पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से काव्य की परिभाषाएं दी है।

भारतीय आचार्यों में सबसे पहले आचार्य "भामह" ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार दी है :-

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"
अर्थात् शब्द और अर्थ को काव्य की संज्ञा दी जाती है।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार :-
"वाक्यम् रसात्मक काव्यम्"
अर्थात् हृदय में पूर्ण (रस) आनन्द देने वाले वाक्यों को काव्य कहते है।

पंडित राज जगन्नाथ के अनुसार :-
"रमणीयार्थः प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"
अर्थात् रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहते है।

यदि इन सभी परिभाषाओं को मिलाया जाए तो इसे ऐसे कहा जा सकता है कि काव्य उस भावपूर्ण रमणीय रचना को कहते हैं जो मानव हृदय को प्रभावित कर चित में एक अलौकिक आनन्द का संचार करती है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं

पाश्चात्य विद्वानों ने इस अपने - 2 ढंग से काव्य की परिभाषा दी है :-

=> डा॰ जॉनसन के अनुसार :-
" कविता वह कला है जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनन्द का संयोजन करती है "

=> Wordsworth के अनुसार :-
" कविता उत्कट (उच्च कोटी) की अनुभूतियों का सहज उच्छलन है "

=> कॉलरिज के अनुसार :-
" कविता ऐसी रचना है जिसमें श्रेष्ठ शब्द श्रेष्ठतम क्रम से प्रयुक्त होते है "

=> P. B. Shelly के अनुसार :-
" कविता सर्वमुखी और सर्वोत्तम मनों के सर्वोत्तम और सर्वसुख पूर्ण क्षणों का लेखा है।

=> Chamber शब्दकोष में कविता की परिभाषा :-
" कल्पना और अनुभूति से उत्पन्न विचारों को मधुर शब्दों में अभिव्यक्त करने की कला कविता है "

हिन्दी विद्वानों द्वारा दी गई कविताओं की परिभाषा :-

=> डॉ॰ श्यामसुन्दर दास के शब्दों में :-
" काव्य वह है जो हृदय में आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे "

- सौरभ

⇒ डा० गुलाबराय के अनुसार :-
"काव्य संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की श्रेय (श्रेष्ठ) को प्रेय (प्राप्त) देने वाली अभिव्यक्ति है।"

⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :-
"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे ही कविता कहते हैं"

⇒ जयशंकर प्रसाद :-
"काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं"

निष्कर्ष :- इन सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कविता का स्वरूप ऐसा ~~विलक्षण~~ विलक्षण और भावात्मक है कि उसे परिभाषा में बांधना कठिन है। फिर भी रस और शब्दार्थ कविता के दो अनिवार्य अंग हैं, अतः सरल शब्दार्थ का नाम ही कविता है। अंततः कहा जा सकता है कि छन्दोबद्ध (लय, तुक, गति, यति) सरस पद रचना को कविता कहते हैं।

प्र॰ काव्य के तत्व ?

उ॰ :- काव्य के चार तत्व होते हैं :-

i) भाव तत्व

ii) बुद्धि तत्व

iii) कल्पना तत्व

iv) शैली तत्व

i) भाव तत्व :- भाव तत्व को रचनात्मक तत्व भी कहा जाता है। यह काव्य का प्राण तत्व है, भाव तत्व को रस नाम से भी जाना जाता है। यदि साहित्य में सभी उपादान हों, पर भाव न हो तो वह रचना नमक रहित भोजन के समान होता है।

भाव प्रत्येक मानव की अन्तरात्मा का एक विशेष अंग है। भाव अनुभूति के कारण ही कोई कविता पाठक के साथ तादात्म्य स्थापित कर पाती है। सभी देशों और कालों के साहित्य की मूलभूत एकता भाव तत्व पर ही आधारित है अतः रस या भाव के बिना काव्य निष्प्राण सा रहता है।

भाव उदारता (खुलापन), भाव तीव्रता तथा भाव विस्तार का निर्वाह भी श्रेष्ठ और महान काव्य की उपलब्धि है।

भाव तत्व के कारण ही कोई श्रोता कविता सुनकर या पढ़कर

वाह-वाह कर उठता है। इसलिए कवि अथवा साहित्यकार को युग अनुरूप भावों के नर-नारी आलंबन, विभाव और अनुभाव आदि का संयोजन करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए किसी आलोचक ने "शकुंतला" नाटक के चतुर्थ अंक की बहुत प्रशंसा की है क्योंकि उसमें भावों की प्रधानता है अतः कहा जा सकता है कि जो बात हृदय में घर कर जाए और बहुत समय तक हृदय में गूंजती रहे उसे भाव कहते हैं।

ii) बुद्धि तत्व :- बुद्धि तत्व को विचार तत्व भी कहते हैं। बुद्धि साहित्य अथवा काव्य को विचार संपदा प्रदान करती है। अपनी कही हुई बात को संगत बनाना और उसे पाठक के हृदय में बिठाना बुद्धि तत्व का ही काम है।

लेखक इसी उद्देश्य के लिए अपने विचारों को काव्य में अभिव्यक्त करता है और अपने दृष्टिकोण से जीवन की व्याख्या करता है तथा जीवन और जगत के चिरंतन सत्यों का उद्घाटन करता है। यही कारण है कि बुद्धि अथवा विचार तत्व काव्य का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि बुद्धि तत्त्व के साथ ही कवि के विचार भाव के अनुगामी बनकर प्रकट होने चाहिए इससे संकीर्ण या संकुचित विचारों को अपने काव्य और साहित्य में स्थान नहीं देना चाहिए।

विचारों के संबंध में कवि या लेखक को युग की अपेक्षा भी नहीं करना चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि बुद्धि तत्त्व को सबल बनाने के लिए उसमें मौलिकता, श्रेष्ठता, उदारता, युग अनुरूपता, प्रगतिशीलता, गम्भीरता तथा कलात्मकता आदि के गुण होने चाहिए।

(iii) कल्पना तत्त्व :- साहित्य में कल्पना का बहुत महत्त्व है पर कल्पना का प्रयोग वहाँ तक होना चाहिए जहाँ तक भाव तत्त्व का सहायक हो, सौन्दर्यवादी और कलावादी विचारकों ने तो कल्पना का इतना गुणगान किया है कि इसे काव्य की समस्त सृजन प्रक्रिया तथा सौन्दर्य सृष्टि का मूल आधार मान लिया गया है।

परन्तु जब भाव गौण हो जाए और कल्पना प्रधान बन जाए तो कवि का काव्य उपहास का पात्र बन जाता है।

कल्पना ही कवि की सृजन शक्ति है और इसी के बल पर ब्रह्मा भी

सृष्टि का पुनः निर्माण करता है। और इसी के बल पर कवि भविष्य द्रष्टा और भविष्य स्रष्टा कहलाता है।

विद्वानों ने कवि की प्रतिभा के अंतर्गत ही कल्पना शक्ति को स्वीकार किया है। अतः कहा जा सकता है कि कल्पना वहाँ तक अच्छी लगती है जहाँ तक अच्छी लगती है जहाँ तक वह भावों को सुन्दर बनाए।

(iv) शैली तत्व :- शैली तत्व भी काव्य में विशेष स्थान रखता है, यह साहित्य का मूल अनिवार्य तत्व है। सत्य तो यह है कि यदि भाव आत्मा है, तो भाषा शैली शरीर है काव्य का क्योंकि भावानुभूति जब शब्दों का रूप ग्रहण करता है तभी साहित्य अस्तित्व में आता है।

कवि ने अपने भावों को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है, उसकी अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को ही शैली कहते हैं। भाव तत्व और भाषा शैली का अटूट संबंध है। शब्द और अर्थ वैसे तो सभी की संपत्ति होते हैं, परन्तु साहित्यकार उसे ऐसे मार्मिक रूप में प्रस्तुत करता है कि पाठक प्रभावित हो जाता है।

चमत्कार पूर्ण और प्रभावशाली भाषा शैली ही दूसरों को प्रभावित कर सकती है।

classmate
Date
Page

शैली तत्व को सुन्दर बनाने के लिए भाषा अलंकार छंद, गुण आदि का सहारा लिया जाता है।

काव्य की भाषा भावानुसार होनी चाहिए। वीर रस के प्रयोग के समय ओजमयी भाषा, शांत रस के प्रयोग में शान्तमयी भाषा होनी चाहिए। शब्द शक्ति का पूरा ज्ञान होना चाहिए कि किस समय किस शक्ति का प्रयोग करना है। मनुष्य के गुणों के समान ही रचना में ओज, प्रसाद और माधुर्य आदि गुण होते हैं, जिनका यथा स्थान प्रयोग करना चाहिए।

अलंकार और छंद शैली को सुन्दर बनाते हैं, इनका प्रयोग भी स्वाभाविक होना चाहिए, अतः शैली तत्व में सरलता, स्पष्टता, स्वाभाविकता, प्रभावात्मकता आदि गुण होने चाहिए।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एक उत्कृष्ट काव्य में इन चारों तत्वों का समन्वय होना आवश्यक है। इनमें से भाव तत्व, बुद्धि तत्व और कल्पना तत्व अनुभूति पक्ष से संबंध रखते हैं तथा चौथा शैली - तत्व अभिव्यक्ति पक्ष से।

classmate

Date
Page

प्र०:- काव्य का वर्गीकरण ?

उ०:- भारतीय आचार्यों ने अपने दृष्टिकोण के अनुसार काव्य के भेद इस तरह से किए है।

1. वाचरता की दृष्टि से :- काव्य को दो भागों में बांटा है :-

i) दृश्य काव्य
ii) श्रव्य काव्य

i) दृश्य काव्य :- इसके अंतर्गत वह रचनाएं आती है जो रंग-मंच पर अभिनीत कि जा सकती है। इसमें मुख्य रूप से नाटक और उसके भेद आ जाते है।

ii) श्रव्य काव्य :- श्रव्य काव्य में उन रचनाओं को रखा जा सकता है, जिनको पढ़कर आनन्द मिलता है। कहानी, उपन्यास निबन्ध, आलोचक, जीवनी, साहित्य आदि इसी वर्ग से संबोधित है। शैली की दृष्टि से श्रव्य काव्य के तीन भेद है :-

i) पद्य काव्य
ii) गद्य काव्य
iii) चम्पू काव्य

i) पद्य काव्य :- छन्दोबद्ध रचना को पद्य कहते है। इसमें कवि को व्याकरण तथा भाषा-संबंधी नियमों

का उल्लंघन करने की स्वतंत्रता होती है।
रामचरित्र मानस, सुरसागर
आदि काव्य ग्रन्थ पद्य काव्य के ही
के उदाहरण है।

ii) गद्य काव्य :- इसमें लेखक पर बात कहने
में किसी प्रकार का नियम
लागू नहीं होता, वह अपने अनुकूल वाक्य
रचना कर सकता है लेकिन इसमें
भाषा तथा व्याकरण संबंधी नियमों
का दृढ़ता पूर्वक पालन करना पड़ता है
इसलिए पद्य रचना कि उपेक्षा, गद्य
रचना लिखना अधिक कठिन होता है,
यही कारण है कि शुक्ल जी ने गद्य
काव्य को कवियों की कसौटी कहा है।
प्रेमचन्द्र लिखित 'गोदान' और
'सेवासदन' आदि उपन्यास गद्य काव्य
की कोटी में आते हैं।

iii) चम्पू काव्य :- जिस रचना में गद्य और
पद्य दोनों का मिश्रण
होता है, उसे 'चम्पू काव्य' कहते हैं
हिंदी काव्य में जयशंकर प्रसाद
द्वारा लिखित 'कामायनी' दिनकर की
'उर्वशी' तथा मैथलीशरण द्वारा लिखी
'यशोदा' चम्पू काव्य के उदाहरण
है।

प्रबंध काव्य की दृष्टि से काव्य के दो भेद माने जाते हैं।

i) प्रबंध काव्य
ii) मुक्तक काव्य

1) प्रबंध काव्य :- प्रबंध काव्य में छन्दों का पूर्वापर संबंध रहता है, इसकी कथा शृंखलाबद्ध होती है। इसके तीन भेद माने जाते हैं :-

i) महाकाव्य
ii) खंडकाव्य
iii) एकार्थ काव्य

i) महाकाव्य :- महाकाव्य में जीवन का व्यापक चित्रण होता है। जैसे :- रामायण, महाभारत।

ii) खंडकाव्य :- खंडकाव्य में पूर्ण जीवन का चित्रण ना होकर केवल जीवन के किसी एक पक्ष अथवा घटना का वर्णन होता है। जैसे :- पंचवटी, जयद्रथ वध।

iii) एकार्थ काव्य :- इस प्रकार के काव्य में किसी संक्षिप्त घटना या प्रसंग को एक लम्बी कविता के रूप में प्रकट किया जाता है। इसमें कथावस्तु का विस्तार नहीं होता जैसे :- प्रिय-प्रवास आदि।

Classmate, Epart

2. मुक्तक काव्य :- इसमें प्रबन्ध काव्य की भांति ना तो कोई कथा होती है और ना ही उसका क्रमबद्ध पूर्ण वर्णन होता है। मुक्तक काव्य के पद परस्पर संबंध में नहीं होते बल्कि प्रत्येक पद स्वतंत्र होता है।
जैसे :- बिहारी की 'सतसई'।

मुक्तक काव्य के दो भेद होते हैं :-
1. रसमय मुक्तक, 2. सूक्तिमय मुक्तक

1. रसमय मुक्तक :- यह वह होते हैं जिसमें भाव तथा रस की अनुभूति के माध्यम से वर्णन किया जाता पाठक इसमें पूरी तरह मग्न हो जाता है। इसे पाठ्य मुक्तक भी कहा जाता है।
जैसे :- तुलसी की 'गीतावली'।

2. सूक्तिमय मुक्तक :- इन मुक्तकों के माध्यम से नीति व उपदेशों का वर्णन होता है।
जैसे :- रहीम के 'दोहे', कबीर की 'साखी' और गिरिधर की 'कुंडलियां'।

अर्थ की रमणीयता के आधार पर काव्य के भेद :-

कविता में दो प्रकार के अर्थों की प्रधानता होती है। एक को वाच्यार्थ और दूसरे को व्यंग्यार्थ कहते हैं।
कभी काव्य में वाच्यार्थ की तो कभी व्यंग्यार्थ की प्रधानता होती है।
इसी के आधार पर आचार्य ने कविता के तीन भेद किए हैं।

i) उत्तम ii) मध्यम iii) अधम

i) उत्तम काव्य :- इसमें व्यंग्यार्थ की प्रधानता होती है इस तरह के काव्य में अर्थ ध्वनित होता है।

ii) मध्यम काव्य :- इस तरह के काव्य में वाच्यार्थ की प्रधानता होती है।

iii) अधम :- इस प्रकार के काव्य में केवल शब्दों का चमत्कार ही होता है।

स्वरूप की दृष्टि से काव्य के भेद :-
निम्नलिखित भेद हैं :-

i) रस काव्य :- जिसमें रस का आस्वादन मिले।
ii) बोध :- जिसमें विचारों की प्रधानता हो।
iii) निती :- जिसमें नीति तथा उपदेश की अभिव्यक्ति हो।

iv) काव्य भास :- इसमें कोई तुकबंदी नहीं है।

पाश्चात्य विचारकों का दृष्टिकोण काव्य के संबंध में

पाश्चात्य विद्वान व्यक्ति और समाज को पृथक-2 करके देखते हैं। इसी आधार पर उन्होंने काव्य के दो भेद किए हैं :-

i) विषयीगत :- इस प्रकार के काव्यों में कवि अपने सुख-दुख, आशा-निराशा तथा जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रकट करता है।

अंग्रेजी में इसे Subjective Poetry कहते हैं। इसमें कवि की अनुभूतियों का चित्रण रहता है।

इसे Lyrics (लीरिक्स) काव्य भी कहा जाता है। इस कविता की विशेषता यह है कि कवि अपनी भावनाओं और अनुभूतियों को इतना सजीव रूप देता है कि पाठक उन्हें अपनी ही अनुभूतियाँ और ~~भावनाएँ~~ भावनाएँ समझने लगता है।

ii) विषयगत :- इस काव्य में कवि की वृत्ति बहिर्मुखी, कवि अपनी निजी अनुभूतियों का वर्णन ना करके देश या जाति का चित्रण अंकित करता है।

इस प्रकार की कविता लिखने के लिए कवि विषयचयन के लिए अपने अंदर नहीं झांकता बल्कि समाज में झांकता है। वह अपनी कहानी समाज के माध्यम से कहता है। इसमें वर्णन की प्रधानता होती है। इसी कारण इसे वर्णनात्मक या विषयात्मक कविता भी कहते हैं।

प्रबंध काव्य के तीन भेद माने जाते हैं:

Bimrang

i) महाकाव्य
ii) खंडकाव्य
iii) एकार्थ काव्य

i) महाकाव्य के लक्षण :- संस्कृत आचार्यों का मत :-

संस्कृत काव्य-शास्त्र के अनुसार महाकाव्य की कथा सर्गबद्ध होनी चाहिए और उसमें पाँच सर्ग होने चाहिए। कथा का प्रसिद्ध होना अनिवार्य है।

Bimrang

ii) कथा का प्रसिद्ध होना अनिवार्य है।
iii) प्रसिद्ध कथा होने के साथ-साथ प्रासंगिक कथाएँ भी हों।
iv) महाकाव्य का नायक कोई राजा, देवता या उच्च कुल का हो या धीरोदात्त गुणों से युक्त होना चाहिए।

v) महाकाव्य में, अर्थ, धर्म, कर्म, मोक्ष में से किसी एक फल की सिद्धि होना आवश्यक है।

vi) महाकाव्य में, श्रृंगार, वीर और शांत रसों में से एक रस प्रमुख हो और अन्य रस उसमें यथास्थान प्रयुक्त हो।

vii) प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द हो सर्ग के अंत में वह सर्ग बदल जाना चाहिए।

viii) महाकाव्य के आरम्भ में मंगलाचरण, आशीषवचन, नमस्कार, सज्जन प्रशंसा या दुर्जन निन्दा का विधान होना चाहिए।

ix) महाकाव्य में, नगर, युद्ध, प्रात:, सांय, वन, पर्वत और ऋतुओं का वर्णन भी अवश्य होना चाहिए।

संस्कृत में कालिदास द्वारा रचित रघुवंश और कुमार-संभव प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। हिन्दी में तुलसीदास द्वारा रामचरित-मानस, जायसी द्वारा पदमावत और जयशंकर प्रसाद की कामायनी, मैथिली का साकेत। हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य हैं।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

महाकाव्य एक वर्णन प्रधान काव्य है जिसमें समाज के व्यापक जीवन का चित्रण होता है। महाकाव्य की कथावस्तु प्रसिद्ध होनी चाहिए, तथा उसका नायक वीर होना चाहिए, उसकी शैली भव्य होनी चाहिए।

हिन्दी विद्वानों का मत :-

हिन्दी काव्य शास्त्रीय विद्वानों ने संस्कृत काव्य शास्त्र तथा पश्चिम सिद्धान्तों का समन्वय करके दोनों के आवश्यक तत्वों को मान्यता दी है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार महाकाव्य में कथावस्तु, व्यापार व्यंजन, भाव व्यंजन तथा संवाद-योजना अनिवार्य है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार महाकाव्य में उदात्त नायक, उदात्त कार्य, उदात्त भाव उदात्त चरित्र और उदात्त शैली अनिवार्य है।

बाबू गुलाब राय के शब्दों में - "महाकाव्य वह विषय प्रधान काव्य है जिसमें अपेक्षाकृत बड़े आकार में प्रतिष्ठित और लोक-प्रिय नायक के उदात्त कार्यों द्वारा जातीय आकांक्षा और अकांक्षाओं का उद्घाटन किया जाता है"।

Date 07/08/08

खण्डकाव्य :- खण्डकाव्य प्रबन्ध काव्य का एक विशेष रूप है। संस्कृत के आचार्यों ने प्रबन्ध काव्य के सर्गबद्ध शब्दों का प्रयोग ना करके सर्गबद्ध अथवा काव्य शब्द का प्रयोग किया है। आचार्य भामह और दण्डी ने सर्गबद्ध का अर्थ विशेष रूप से महाकाव्य ही लिया है। सर्वप्रथम रुद्रट ने महाकाव्य और खण्डकाव्य पर मौलिक ढंग से विचार किया है, उनका मत है कि महाकाव्य में चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) और सभी रस यथा स्थान होते हैं। परन्तु लघु काव्यों में केवल एक वर्ग और रस का वर्णन होता है।

परिभाषाएँ :-

आचार्य विश्वनाथ :- "खण्डकाव्य में एक देश या अंश या एक घटना का अनुसरण रहता है"

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र :- "महाकाव्य के ही ढंग पर जिस काव्य की रचना होती है पर जिसमें पूर्ण जीवन ग्रहण ना करके, खण्ड जीवन ही ग्रहण किया जाता है उसे खण्डकाव्य कहते हैं"।

रामभुनाथ मिश्र :- समान्यतः आठ अथवा आठ से अधिक सर्गों वाले ~~महाकाव्य~~ प्रबंध काव्य को महाकाव्य और आठ से कम सर्गों वाले को खण्डकाव्य कहा जाता है। जिसमें जीवन का खण्ड दृश्य चित्रित होता है और कथावस्तु की लघुता तथा उद्देश्य की सीमाओं के कारण जो बड़े आकार के नहीं कहे जाते खण्डकाव्य कहलाते है "।

डॉ. ब्रजेश्वर शर्मा :- "खण्डकाव्य में एकांकीगता होता है, उद्देश्य भी चित्रित होता है, आकार भी लघु होता है। महाकाव्य की अपेक्षा खण्डकाव्य का क्षेत्र सीमित होता है, उसमें जीवन की अनेकरूपता नहीं रहती।

महाकाव्य और खण्डकाव्य में निम्न तत्व पाए जाते है :-

कथावस्तु
चरित्र- चित्रण
संवाद
रस
वातावरण
उद्देश्य
भाषा- शैली

classmate
Date
Page

लेकिन महाकाव्यों में सभी तत्वों का पूरे विस्तार से चित्रण रहता है जिसकी कथावस्तु में पात्रों की संख्या अधिक प्रासंगिक कथाओं की योजना, विविध रसों का चित्रण, वातावरण की विस्तृत ~~विवेचन~~ आख्यानत और विविध उद्देश्यों को निहित किया जाता है।

खण्ड काव्य की विशेषताएँ :-

i) खण्ड काव्य में जीवन का संपूर्ण चित्रण ना होकर उसके किसी महत्वपूर्ण पक्ष का चित्रण रहता है।

ii) खण्डकाव्य में एक ही घटना अपने लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ती है। इसमें प्रासंगिक कथाएँ भी नहीं होती और ना ही कथा का अनावश्यक विस्तार होता है।

iii) अनुभूति के किसी एक ही पक्ष के मार्मिक चित्रण द्वारा पाठक को आनंदित किया जाता है। कवि अपने वर्णन कौशल से इसे काव्य तथा हृदयग्राही रूप देता है।

iv) खण्डकाव्यों में सर्गों की संख्या कम होता है कवि कथानक के अनुरूप सर्गों की योजना करता है।

v) छंद योजना में भावानुकूलता को महत्व दिया जाता है।

classmate
Date
Page

ii) रस की दृष्टि से खण्डकाव्य में किसी रस की रस की अभिव्यक्ति होती है।

iii) सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निन्दा आदि के लिए विशेष अवकाश नहीं रहता, परन्तु लयात्मकता बनी रहती है। अलंकार और शब्द-शक्तियों की योजना भावों को उत्कर्ष प्रदान करती है।

iiii) खण्डकाव्य का उद्देश्य जीवन और प्रसिद्धि की संभावनाओं को जगाने में समर्थ (स्मर्थ) होता है। उदात्त संवेदनाओं का होना जरूरी होता है।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि खण्डकाव्य प्रबंध काव्य सा ही लगता है, पर महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है। जगन्नाथ द्वारा लिखित - उद्धवशतक तथा नरोत्तम दास द्वारा लिखित - सुदामा-चरित हिन्दी के प्रसिद्ध खण्डकाव्य है।

प्र:- महाकाव्य और खण्डकाव्य में अंतर बताएं?

महाकाव्य

मुक्तक काव्य :-

~~काव्य के~~ दो भेद हैं :-

प्रबंध और मुक्तक

प्रबंध काव्य में पहले सर्ग के साथ संबंध रहता है जबकि मुक्तक का हर एक पद स्वतः पूर्ण होता है।

मुक्तक शब्द (मुक्त धातु) में क्त प्रत्यय के प्रयोग से बना है।, जिसका अर्थ है अपने आप में सम्पूर्ण।

परिभाषा :-

आनन्द वर्धन :- जिस काव्य में पूर्वापर ~~सम्बन्ध~~ प्रसंग (निरपेक्ष) रस का सामर्थ्य होता है वह मुक्तक कहलाता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :- मुक्तक में प्रबंध के समान, रस की धारा नहीं रहती, जिसमें कथा प्रसंग की परिस्थिति में अपने आप को भूले हुए पाठक का मन, मग्न हो जाए

और हृदय में एक स्थायी भाव ग्रहण करे। इसमें रस के ऐसे कई छींटे पड़ते हैं जिससे हृदय कलीका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है। अतः कहा जा सकता है कि मुक्तक में तीन बातें विशेष होती हैं :-

i) कि इसमें किसी मार्मिक दृश्य अथवा घटना का वर्णन होता है।

ii) इस वर्णन में संयम रहता है और वह स्वतः पूर्ण होता है।

iii) मुक्तक काव्य में रस अथवा चमत्कार प्रदर्शन की क्षमता रहती है।

मुक्तक काव्य के भेद :-

बाबू गुलाब राय ने अपने पुस्तक "काव्य के रूप में" मुक्तककाव्य के दो भेद किए हैं :-

i) पाठ्य मुक्तक

ii) गेय मुक्तक

गुलाब राय के अनुसार इन दोनों भेदों के बीच की कड़ी बड़ी सूक्ष्म और अस्थिर है क्योंकि पाठ्य सामग्री भी गेय हो सकती है और कुछ पद ऐसे होते हैं जो विशेष रूप से गेय होते हैं।

पाठ्य मुक्तक में कवि बात को एक निपेक्ष द्रष्टा या वकील

Date
Page

के रूप में कहता है।

पाठ्य मुक्तक प्रायः नीती, शृंगार और विरह से संबंधित होते है। नीति मुक्तको मे भावना अधिक प्रधानता विषय की होती है। तुलसीदास की "दोहावली" कबीर, रहीम और वृंद आदि के "दोहे" ~~हमें~~ भी और नीति मुक्तकों के उत्कृष्ट उदाहरण है।

"बिहारी सतसई", "शृंगार परक" मुक्तकों का अच्छा उदाहरण है।

मुक्तकों के अन्य भेद :

i) संख्या मूलक मुक्तक :- जैसे मुक्तको मे संख्या को आधार बनाया जाता है, जैसे युग्म, बत्तीसी, दशक, शतक, हजारा।

ii) छंद आदि मिश्रित मुक्तक :- इनमें चौपाई, दोहावली, छप्पय, कुण्डलिया, बरवै आदि आते है।

iii) रागाश्रित मूलक मुक्तक :- जो मुक्तक रागों पर आधारित होते है वह रागाश्रित मूलक मुक्तक कहलाते है जैसे :- सूरसागर, गीतावली आदि।

iv) ऋतु और उत्सव संबंधी मुक्तक जैसे :- होली, फाग, बारहमासा आदि।

v) धर्म पर आधारित मुक्तक :- जैसे श्लोक, भजन, शब्द, साखी, स्तुति आदि।

vi) लोकाश्रित मुक्तक :- जो मुक्तक लोगों पर आधारित होते हैं जैसे :- पहेलियां, कहावतें आदि।

vii) फुटकल मुक्तक काव्य :- जैसे :- दूत काव्य, सन्देश काव्य, नखशिख संवाद आदि।

viii) साहित्य पर आधारित :- जैसे :- छंद, रस, ध्वनि, नायिका भेद आदि।

ix) विदेशी रूपक जैसे :- गज़ल, रुबाइयां, सम्बोधन गीत आदि।

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने मुक्तक के तीन भेद :

i) रीति मुक्तक
ii) नीति मुक्तक
iii) गीति मुक्तक

i) रीति मुक्तक :- मे काव्य शास्त्रीय तत्वों की अभिव्यक्ति होती है।

ii) नीति मुक्तक :- मे उपदेश प्रधान होता है।

iii) गीति मुक्तक :- मे संगीत की प्रधानता होती है।

निष्कर्ष :- विविध आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से मुक्तक काव्य के विभिन्न भेद किए है जिनसे इसका स्वरूप और भी स्पष्ट हो जाता है।

CLASSMATE
Date
Page 04/08/08

काव्य का उद्देश्य ?

गीति काव्य :- हिन्दी में गीति काव्य नामक विधा पाश्चात्य साहित्य के माध्यम से आई है। पाश्चात्य साहित्य में इसके लिए Lyric (लीरिक) Poetry शब्द प्रयुक्त होता है Lyric शब्द का सम्बन्ध वीणा, आदि वाद्य यन्त्र से है। गीति काव्य, गीत काव्य अथवा प्रगीत काव्य किंवा Lyric Poetry का पर्याय है।

परिभाषा :- भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-2 ढंगों से गीति काव्य की परिभाषा दी है।

हरबर्ट रीड के अनुसार :- "गीत का मूल तत्व तो लुप्त हो गया है किन्तु उसका व्यावहारिक पक्ष प्रचार में आ गया है। अब गीत से उस रचना का बोध होता है जिसमें सूक्ष्म अनुभूतियाँ अथवा उन अनुभूतियों की प्रतिक्रियाएँ हो जो स्वगत आनन्द के प्राधान्य से होती है" ।

Date
Page

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका :- अनुसार "ताकृत गन्धर्व ज्ञेय कविता का नाम गीति काव्य है।"

Hadson :- गीत काव्य में स्वाभिता पर बल देते है। हडसन का कहना है कि स्वाभिता को (आप) गीति काव्य की सबसे बड़ी कसौटी है, किन्तु शुद्ध स्वाभिता नायक की मानवीय संवेदनाओं पर आधारित होती है।

महादेवी वर्मा के अनुसार :- "गीत स्वाभित सीमा में तीव्र सुख - दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो उठे"।

डॉ. राम चन्द्र शर्मा :- कवि के हृदय की मार्मिक अनुभूतियों का संगीतात्मक चित्रण ही गीत अथवा गीति है

डॉ. राम कुमार वर्मा के अनुसार :- गीति काव्य की रचना आत्मा और अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण में होती है।

गीति काव्य की विशेषताएँ :-

> आत्माभिव्यंजना :- गीति काव्य में गेयता, शब्द चयन, भावमयता

भावुकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता और विचारों की एक रूपता को स्थापित किया गया है।

ii) अनुभूति की प्रधानता :- गीति की रचना भावना की विभूति में होती है, जिसमें कवि की अनुभूतियाँ तीव्र होती, अपितु इसमें हृदय स्पर्शी होती है।

iii) आत्म अनुभूति :- गीति काव्य में कवि अपने सुख दुख, राग-द्वेष और अन्य भावों की स्वयं अभिव्यक्ति होती है।

iv) रागात्मकता :- गीति काव्य में हृदय तत्व की प्रधानता होती है।

v) संगीतात्मकता :- गीत और संगीत का गहरा संबंध है। संगीत मन को मुग्ध और आनंदित करने का लीन कर देता है।

vi) संक्षिप्तता :- थोड़े शब्दों में भावों को व्यक्त करने को संक्षिप्तता कहा जाता है। यह गीति काव्य की प्रमुख विशेषता है। रागात्मकता में तीव्रता बनाए रखने के लिए गीत का आकार छोटा होना चाहिए।

vii) निरपेक्षता :- गीति काव्य स्वतः पूर्ण होते हैं उसमें पूर्वापर सम्बन्ध की अपेक्षा नहीं रहता।

viii) भाव - आवेग :- इसमें सुकोमल भावनाओं का प्रचण्ड वेग श्रोता को ऐसा प्रभावित करता है कि वह आनन्द सागर में मग्न हो जाता है।

ix) मार्मिकता :- यह गीति काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है, जो भाव, विचार और शैली में व्यंजना के द्वारा उपलब्ध होती है।

गीति काव्य के भेद :-

i) वीर गीत
ii) करुणा गीत
iii) व्यंग्य गीत
iv) उपालम्भ गीत
v) गीति नाट्य (गीत + नाटक)
vi) रूपक गीत
vii) विचारात्मक प्रधान गीत
viii) सम्बोधन गीत
ix) चतुष्पदी
x) सामाजिक गीत

निष्कर्ष :- निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि गीति काव्य एक महत्वपूर्ण काव्य विधा है।
इसमें कृत्रिमता का अभाव रहता। व्यक्तिता, रागात्मकता, भावात्मकता और संगीतात्मकता गीति काव्य के अनिवार्य तत्व है।

प्रश्न :- काव्य के प्रयोजन :

उत्तर :- इस संसार मे मनुष्य जो भी कार्य करता है उसमे उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य रहता है संस्कृत साहित्य की यह विशेषता रही है कि कोई भी ग्रंथकार अपने ग्रंथ की रचना का प्रयोजन अवश्य बताता है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानो ने अपने अपने ढंग से काव्य प्रयोजन पर विचार व्यक्त किया है।

1 :- संस्कृत काव्य शास्त्र मे काव्य के प्रयोजन :-

(i) भरतमुनी के अनुसार :- संस्कृत काव्य शास्त्री के आदि आचार्य भरतमुनी माने जाते है। उनके अनुसार नाट्य शास्त्र दुखो के श्रम से और शोक से पीड़ित वर्ग के लोगो को इस संसार से सुख प्रीति का साधन है इसमे स्पष्ट होता है कि भरतमुनी जनहित को नाट्य कथा काव्य का प्रयोजन मानते है इस तरह उन्होने धर्म अर्थ (धन प्राप्त करने का साधन) आयु, यश, हित, ज्ञान और उपदेश को काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है,

भामह के अनुसार :- आचार्य भामह के काव्य प्रयोजनो का उल्लेख दो आधार पर किया गया है। (1) कवि के आधार पर (2) पाठक के आधार पर

(ii) भामह के अनुसार काव्य से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की लाभ ... है कलाओ मे निपुणता आदि से है। कीर्ति आनन्द की प्राप्ति होती है। इन प्रयोजनो मे से कीर्ति का लाभ कवि को मिलता है तथा कीर्ति का लाभ पाठक और कवि दोनो को मिलता है।

(iii) वामन के अनुसार :- काव्य के दो ही प्रयोजन है प्रीति और कीर्ति। यह दोनो प्रयोजन है, जीवन काल और उसके बाद भी रहते है है।

(iv) आनन्द वर्धन :- आनन्द वर्धन ने काव्य का मुख्य प्रयोजन प्रीति को माना है। अभिनव प्राप्त मे भी इसी को मानके आचार्य कुन्तक के काव्य प्रयोजन पर गंभीरता से विचार किया है, उनके अनुसार काव्य अर्थ काम, मोक्ष का साधक होता है जो सहृदय को आनन्द देने वाला है,

(v) आचार्य विश्वनाथ ने भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को काव्य का प्रयोजन माना है।

(vi) पंडित राज जगन्नाथ :- ने यश प्राप्ति, राजा और देवताओ की प्रसन्नता को काव्य का प्रयोजन माना है। आचार्य मम्मट के अनुसार मम्मट के काव्य शास्त्र मे आचार्य मम्मट के काव्य प्रयोजनो रहे है। उन्होने काव्य के प्रयोजनो मे यश की प्राप्ति, धन की प्राप्ति तथा कान्ता सम्मत, मधुर उपदेश इन छ: प्रयोजनो की चर्चा की है।

Program No.

आचार्य मम्मट के यह प्रयोजन परिवर्तित संस्कृत और हिन्दी के आचार्य को सर्वाधिक मान रहे हैं।

हिन्दी आचार्यों का मत:-

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों ने संस्कृत के आचार्यों का अनुकरण किया। आचार्यों का अनुकरण किया।
आचार्य कुलपति के अनुसार यश, अर्थ, अलौकिक आनन्द, दुःखों का नाश और कान्ता सम्मत उपदेश, यह काव्य के प्रयोजन है, स्पष्ट है कि इन पर आचार्य मम्मट का प्रभाव है, हिन्दी के

⇒ आचार्यों महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ज्ञान विस्तार और मनोरंजन ही काव्य के प्रयोजन हैं

⇒ अयोध्या सिंह उपाध्याय के अनुसार " कविता से भावों में सरसता तथा सुन्दर उक्तियों में मनमोहकता आती है यह आलोक की माला दिखाकर लोक हृदय के तमपुंज का नाश करती है, इस प्रकार उपाध्याय जी के अनुसार :- काव्य के दो प्रयोजन हैं: (1) ज्ञान और आनन्द

⇒ मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार :- मनोरंजन और उपदेश वह लिखते हैं, केवल मनोरंजन और उपदेश कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचितता का मर्म भी होना चाहिए।

⇒ जयशंकर प्रसाद के अनुसार " संसार को काव्य से दो प्रकार के लाभ पहुँचते है, मनोरंजक और शिक्षा।

Page No. Dated

⇒ सुमित्रानंद पंत के अनुसार ! ने सोवत सुखाय और लोक हित यह दो प्रयोजन स्वीकार किए हैं। सर्वत - सुखाय कलाकार के व्यक्तित्व से और लोक हित बहुजन से संबंध रखता है

⇒ महादेवी वर्मा के अनुसार !! काव्य प्रयोजन मानव हृदय मे समाज के हित अनुकूल उत्पन्न करता है।

⇒ डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, डां नगेन्द्र आदि अलग -2 आलोचक ने भी काव्य प्रयोजन के संबंध मे अपने -2 विचार प्रकट किए हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि विद्वानों ने युगीन आवश्यकताओं को ध्यान मे रहकर मौलिकता से काव्य प्रयोजन का विवेचन किया है।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार :

भारतीय चिंतन के दृष्टिकोण मे आध्यात्मिकता की प्रधानता आदिकाल मे ही रही है, इसलिए यहां कि विचारकों की चिंतन धारा आत्मामुखी है, इसके विपरीत पाश्चात्य चिंतकों का दृष्टिकोण वस्तु पर रहा है। यही कारण है कि अधिकांश आचार्य मे ही काव्य प्रयोजन का विवेचन किया है। स्थूल रूप से कुल आचार्यों को चार वर्गो मे बांटा जा सकता है,

1) पहला वर्ग उन आचार्यो का है जो लोक मंगल को ही काव्य प्रयोजन मानते हैं ।। प्लेटो, टाल-स्टाय, और रसकिन इन वर्ग के प्रतिनिधि आचार्य हैं। प्लेटो समाज सुधारक और आदर्शवादी राजनीतिज्ञ थे उनके अनुसार कला का सही कार्य आत्मा के समक्ष उन प्रतिमाओं को रखना है जो आन्तरिक रूप से सुन्दर और महान है। रसकिन ने भी स्पष्ट

Remarks Signature

स्पष्ट शब्दों में कहा है कि वही कला ग्रहण योग्य है, जिसमें अधिक से अधिक मनुष्य का हित निहित है। टॉलस्टाय कला को मानव एकता का महत्वपूर्ण साधन मानते हैं।

(2) दूसरा वर्ग :- उन आचार्यों का है, जो केवल आनन्द को ही काव्य प्रयोजन मानते हैं। शिलर और शैले इस वर्ग के आचार्य हैं। शिलर का मत है कि आह्लाद का सबंध ही कलाओं का लक्ष्य है, क्योंकि मानव सुख से अधिक उदात्त और गंभीर अन्य कोई समस्या नहीं है। शैले जीवन और काव्य का परस्पर सबंध मानते हैं। परन्तु फिर भी काव्य प्रयोजन केवल आनन्द ही मानते हैं

(3) तीसरा वर्ग :- उन आचार्यों का है जो नीति और आनन्द को काव्य का प्रयोजन मानते हैं। अरस्तु, लॉन जाइनस, मैथ्यू, ऑनर्नल्ड इसी काव्य के अन्तर्गत आते हैं। अरस्तु ने ~~इसी~~ काव्य के ~~अंतर्गत~~ दो प्रयोजन माने हैं। शिक्षा और आनन्द। अपने गुरु प्लेटो द्वारा काव्य पर किए गए आक्षेपों का निवारण करते हुए उन्होंने लिखा है कि कला का विशिष्ट उद्देश्य आनन्द है, और आनन्द काव्य का मुख्य प्रयोजन है। मैथ्यू और ऑर्नल्ड काव्य को जीवन की आलोचना मानते हैं। उनके अनुसार काव्य की जीवन की आलोचना मानते हैं उनके अनुसार काव्य नगत

के यथार्थ का चित्रण करके उसे आदर्शमुखी बनाता है।

(4) चौथा वर्ग:- उन आचार्यों का है जो काव्य को जीवन का किसी भी प्रकार का संबंध स्वीकार नही करते उनकी दृष्टि मे काव्य -2 के लिए अथवा कला -2 के लिए है अथवा कला -2 के लिए है। वॉल्टर, पेटर, ऑस्कर वाइल्ड इस वर्ग के आचार्य है, इन्होने तो यहा तक कह दिया है कि साहित्य मे सदाचार और नैतिकता को खोजना वैसी ही मूर्खतापूर्ण कार्य है जैसे:- त्रिभुज को दुराचार और चतुर्भुज को सदाचारी कहना इस प्रकार काव्य का जीवन से काव्य संबंध है, इसको लेकर पाश्चात्य काव्य मे उनके मत प्रचलित हो गए जिनका उल्लेख किया गया है।

1) काव्य के हेतु:- हित करने वाले

1) कला के लिए:-

इस सिद्धान्त को मानने वालों का विचार है, कि कला का क्षेत्र नीति और सदाचार से भिन्न है। कवि का कार्य का किसी आदर्श सिद्धान्त की स्थापना करना है बल्कि कला स्वयं ही अपना उद्देश्य है कलाकार को अपनी कला से मन का जो सन्तोष प्राप्त है, वही कला का फल है। परन्तु इस विचारधारा का यह दुष्परिणाम निकला की साहित्य की रचना का प्रचलन कुरुचिपूर्ण हो गया है, और कविता खिलवाड़ की वस्तु रह गई

) कला जीवन के लिए:- इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि कला को जीवन से अलग नही किया।